श्री कड़कनाथ समूह द्वारा जीवन स्तर बढ़ाने का अनूठा प्रयास

कृषि विज्ञान केन्द्र, झाबुआ द्वारा परियोजना के क्षेत्र झायडा, मेहन्दीखेड़ा एवं नेगडिया गावों में कृषकों के साथ चर्चा के दौरान कुछ जानकारी केन्द्र के वैज्ञानिकों ने एकत्रित की जिसमें कड़कनाथ की अधिक बाजार मांग, खुले रुप में पाले जाने वाली मुर्गियों की पालन वृद्धि की धीमी गति, मृत्युदर अधिक होना जो कि यहाँ इस प्रजाति की विकास गति अवरुद्ध किए हुए है।

वैज्ञानिकों द्वारा कृषकों के साथ विचार विमर्श के बाद एक समान विचारधारा एवं मुर्गी पालन के इच्छुक कृषकों का एक समूह श्री कड़कनाथ समूह बनाया। जिसके अन्तर्गत ग्राम झायड़ा में कृषि विज्ञान केन्द्र के सहयोग से कड़कनाथ प्रजाति के विकास हेतु उल्लेखनीय कार्य किया जा रहा है। जिसके अन्तर्गत वैज्ञानिकों द्वारा कड़कनाथ पालकों कों आहार प्रबन्धन जल प्रबन्धन, टीकाकरण, रोग प्रबन्धन एवं विपणन आदि की सम्पूर्ण जानकारी, प्रशिक्षण एवं सैद्धान्तिक रुप से बताई गई। समूह के माध्यम से कड़कनाथ महाराष्ट्र, गुजरात, राजस्थान के इच्छुक कड़कनाथ पालक ले जा रहे हैं। इस समुह के सदस्यों को सर्वप्रथम कृषि विज्ञान केन्द्रझाबुआ पर मुर्गी पालन का प्रशिक्षण दिया गया। जिसमें उनकों 10 दिन के चूजों को लाने से लेकर सन्तुलित आहार, दाना-पानी के बर्तन, टीकाकरण, दवाईयों की पूरी जानकारी दो दिवसीय प्रशिक्षण में दी गई। इसके बाद समूह के 10 सदस्यों श्री पानसिंह हूमजी, बाबु, रमेश, नानसिंह, झीतरा, उदयसिह ग्राम झायडा एवमं श्री मेथिया, लीलसिह एवमं मांगलिया ग्राम नेगडिया के यहां राष्ट्रीय कृषि नवोन्मेषी परियोजना से पक्के कड़कनाथ मुर्गीघरों का निर्माण करवाया गया। इन प्रत्येक मुर्गीघरों में 10 दिन उम्र के 100 चूजे छोडे गये। दाने एवं पानी पीने के बर्तन व सन्तुलित आहार देकर सम्पूर्ण तकनीकि समझाई गई। रानीखेत एवं दुसरी बीमारियों की रोकथाम हेतू समय समय पर टीकाकरण एवम दवाईयाँ दी गई। अब कृषक कड़कनाथ पालन की सम्पूर्ण तकनीकि जानकारी समझ कर स्वेच्छा से इसका पालन कर रहे है। ये अब कम लागत मुर्गी आहार का प्रयोग भी करने लगे है। लगातार देखरेख एवं टीकाकरण से कड़कनाथ की मृत्युदर 50 प्रतिशत से 10-12 प्रतिशत तक आकर, जीने की क्षमता में अभूतपूर्व वृद्धि हुई है तथा कड़कनाथ तीव्र गति से वृद्धि कर 105 से 120 दिन में 1.10 कि.ग्रा. का हो गया है। कृषक भाई इसका 400 से 500 रुपये प्रति नग के दर से बेच रहे है। कड़कनाथ पालन को निरन्तर बनाये रखने के लिए समूह के सदस्य कड़कनाथ बेचने पर प्रति नग पर 100 रुपये समूह के खाते में जमा कर रहे है। समूह के सदस्य श्री पान सिंह ने प्रथम चरण मे कड़कनाथ पालन से अब तक रुपये 29,750 /- श्री हुमजी ने रुपये 26,800 /- श्री बाबु ने रुपये 28,500 /- श्री नानसिंह ने रुपये 30,900 /- एवं श्री उदयसिंह ने रुपये 31,000 /- कमा लिये है। इस प्रकार समूह के सदस्यों ने कड़कनाथ पालन कर तीन चरणों (एक वर्ष) मे कुल रुपये 80,000 /- से 1,10000 /- तक कमा लिये है।

इस समुह से काफी प्रेरित होकर अन्य किसान भाईयों ने भी कम लागत में मूर्गीघर बनाकर मूर्गीपालन शुरु कर दिया है जिसके फलस्वरुप इन गॉवों में आदिवासी भाईयों का पलायन कम होकर इस तरह के व्यवसायों पर जोर बढ़ रहा है। जिले की विभिन्न संस्थाओं द्वारा भी दूसरे गॉवों के कृषकों को कड़कनाथ पालन की तकनीकि समझाने के लिए इन गॉवों

के कृषकों के यहां मूर्गीघरों मे पाले जा रहे कड़कनाथ को जीवन्त रुप में दिखाकर प्रेरित किया जा रहा है।

श्री कड़कनाथ पालन समूह बनाकर कृषि विज्ञान केन्द्र, ने अन्य कृषकों के लिए अनुकरणीय सफलता पाई है। कृषक भाई कड़कनाथ पालन अपनाकर आत्मनिर्भर बन रहे है।

श्री कड़कनाथ समूह की सफलता एवमं किसानों के बढते आत्मविश्वास को देखकर आत्मा परियोजना अंतर्गत कलेक्टर महोदय ने 15 अगस्त 2010 को इस समूह के सदस्यों को प्रशस्ति पत्र एवं रुपये बीस हजार प्रोत्साहन स्वरुप प्रदान किये। दिनांक 19 जून 2011 को भूमि निर्माण द्वारा जाल सभागृह इन्दौर मेंआयोजित राष्ट्रीय संगोठी एवं पुरस्कार वितरण समारोह में सर्वश्रेष्ठ स्वंय सहायता समूह (मुर्गीपालन) वर्ग में जिले के ग्राम झायडा के श्री कड़कनाथ पालन समूह को उनके उल्लेखनीय कार्यो हेतू भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली की उपमहानिदेशक (मत्स्य) डॉ.बी. मीनाकुमारी ने प्रशस्ति पत्र एवं शील्ड प्रदान कर सम्मानित किया।